गुरुकृपा के आलोक को धारण करें

शाम्भवी क्रिश्चन

‘मन्दिर में रहो’ सत्संग
सिद्धयोग वैश्विक हॉल में सीधा वीडिओ प्रसारण
शनिवार, १८ अप्रैल, २०२०

नमस्ते।

श्रीगुरुमाई ने भगवान नित्यानन्द मन्दिर से सीधे वीडिओ प्रसारण द्वारा आयोजित इन सत्संगों को जो शीर्षक प्रदान किया, वह है ‘मन्दिर में रहो।’ हम कितने भाग्यशाली हैं—हममें से हर एक बहुत भाग्यशाली है—कि हम इस समय “जहाँ हैं वहीं रहते हुए” इन सत्संगों में भाग ले पा रहे हैं, जबकि हममें से अनेक लोग लॉकडाउन में हैं जोकि कोविड-१९ के कारण विश्व के अधिकतर भागों में लागू है।

जैसा कि स्वामी ईश्वरानन्द ने पिछले गुरुवार यानी १६ अप्रैल को हुए सत्संग के दौरान कहा था : यद्यपि हम लोग *व्यावहारिक तौर पर* एक-दूसरे से दूर-दूर रह रहे हैं, तथापि, गुरुमाई जी की कृपा से हम पहले से कहीं अधिक साथ में हैं। जब स्वामी जी ने ऐसा कहा तब वे शब्द वास्तव में मुझे अन्दर तक छू गए। इस बात से मुझे याद आया कि कैसे शक्तिपात ध्यान-शिविरों के समापन पर, गुरुमाई जी कहतीं, “हमारे हृदय हमेशा एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।”

इस कठिन समय में हमें श्रीगुरु के साथ—और संघम् में—इस जुड़ाव का एहसास पहले से कहीं अधिक स्पष्टता से हो रहा है। श्रीगुरु की कृपा के लिए मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।

हम सभी सिद्धयोग पथ पर **हैं**।
हम सभी गुरुकृपा के आलोक को धारण किए हुए हैं।

हाल ही में, एक साधिका मुझे बता रही थीं कि उनके एक सिद्धयोगी मित्र इस समय के लिए कहते हैं, "कृपा की छत्रछाया में।" कितना सटीक और कितना सच है यह! हम *निश्चित ही* कृपा की छत्रछाया में हैं। और जब से हमें शक्तिपात प्राप्त हुआ है, हमारा जीवन कृपा की छत्रछाया में ही रहा है। श्रीगुरु की कृपा के लिए मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।

गुरुमाई जी ने हमें सिखाया है कि हम अवश्य ही ध्यान से देखना सीखें कि प्रकृति कैसे कार्य करती है और प्रतिक्रिया देती है, कैसे वह बीजों को खुद में छिपाकर फूल खिलाती है; कैसे प्रकृति सौम्य भी है और उग्र भी, करुणामयी भी है और निष्ठुर भी, सुहावनी भी है और क्रूर भी। प्रकृति चाहे कोई भी परिधान धारण करे, हमारे पास यह अवसर है कि हम उसकी हर राजसी छटा में उसका सम्मान करें।

अप्रैल माह के दौरान श्री मुक्तानन्द आश्रम में, हम सबने सोचा कि अन्ततः वसन्त ऋतु आ गई है और हमने शीत ऋतु की प्रचण्डता को अलविदा कह दिया है। मैं ऐसा क्यों कह रही हूँ? क्योंकि अप्रैल माह के दौरान, हमें आश्रम-परिसर में बेहद ख़ूबसूरत और चटकीले रंगों की झाड़ियों और फूलों के तोहफ़े मिले। यहाँ सैकड़ों ट्यूलिप्स, डैफ़ोडिल्स, फ़ोरसाइथिया, हाइयसिन्थ्स, ग्रेप हाइयसिन्थ्स, क्रोकसिस, पेरिविन्कल्स, मेगनोलिया और अज़ेलियस के रंग-बिरंगे फूल खिल रहे हैं।

नित्यानन्द झील के आस-पास और आश्रम-परिसर में लगे वृक्षों पर बड़े उल्लास के साथ नई कोपलें फूटने लगी हैं, उन पर फल-फूल आने शुरू हो गए हैं। सूची लम्बी है।

हर रोज़ हमें और भी अधिक पक्षियों का कलरव सुनाई देने लगा है और वसन्त ऋतु के समय यहाँ उड़कर आने वाले नई प्रजाति के पक्षी भी दिखाई देने लगे हैं—रोबिन, रेड-विंग्ड ब्लैकबर्ड, कलहंस, गोरैया, फ्लिकर [एक तरह का कठफोड़वा] और फ़ोएबेज़।

और जब हम वसन्त ऋतु के इन मनमोहक रंगों और लुभावनी ध्वनियों में मन्त्रमुग्ध होते जा रहे थे, तभी कल शाम हमें *शीत ऋतु* का एक और उपहार मिल गया।

वर्षा की हल्की-हल्की फुहार पड़ने लगी। वर्षा की बूँदों में घुल-मिल गए थे नन्हें-नन्हें श्वेत कण . . . जो बारिश के *नहीं* थे। आज सुबह हमारी आँख खुली तो देखा कि आसमान ने हमारे लिए क़रीब-क़रीब सात इंच तक की बर्फ़ भेजी है, जिसने पूरे आश्रम-परिसर पर एक चमचमाती सफ़ेद चादर ओढ़ा दी है।

जी हाँ, हम स्तब्ध थे—परन्तु फिर जैसा कि मैंने पहले बताया कि हमें यह भी सिखाया गया है कि हम प्रकृति के मनमौजीपन का, उसकी इच्छा का सम्मान करें।

गुरुमाई जी ने मुझे बताया है कि भारत में 'मर्फ़ीज़ लॉ' यानी मर्फ़ी के नियम को 'मर्फ़ी का भगवान' कहा जाता है। तो यह वही है। हमें लगा कि यह वसन्त ऋतु है, परन्तु 'मर्फ़ी के भगवान' के अनुसार, श्री मुक्तानन्द आश्रम में शीत ऋतु अभी पूरी तरह से समाप्त नहीं हुई है।

मैं आपसे ऐसा नहीं कह रही हूँ कि आप हमदर्दी जताएँ मुझसे—जो इतनी बेसब्री से गर्मियों के मौसम का इन्तज़ार कर रही थी। परन्तु यदि आप सहानुभूति जताना ही चाहते हैं तो आप मुझे अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ ज़रूर भेज सकते हैं! ☺

हर शनिवार शाम को हम 'मन्दिर में रहो' सत्संगों में, आरती के बाद नामसंकीर्तन में भाग लेते आए हैं। परन्तु आज रात हम वैश्विक कार्यक्रम "One World: Together at Home," "एक विश्व : घर पर एक-साथ," का समर्थन कर रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन [WHO] व ग्लोबल सिटिज़न ग्रुप [विश्व नागरिक समुदाय] ने इसका आयोजन किया है। इसलिए जब मैं आप सबको अपने साथ "सद्‌गुरुनाथ महाराज की जय" गाने के लिए आमन्त्रित करूँगी, उसके बाद यह सीधा वीडिओ प्रसारण समाप्त हो जाएगा।

हममें से कई लोग यह जानते हैं कि संगीत ऐसा माध्यम है जिसमें हृदय की सबसे गहरी भावनाओं को व्यक्त करने का नैसर्गिक सामर्थ्य है। मैंने कई देशों से लोगों के ऐसे हृदयस्पर्शी वीडिओ देखे हैं जिनमें लोग लॉकडाउन में होते हुए भी अपनी बाल्कनी से, खिड़की से या छत से, साथ मिलकर गाने के तरीक़े खोज ले रहे हैं—वे गा रहे हैं, वाद्ययन्त्र बजा रहे हैं और संगीत के माध्यम से एक-दूसरे को प्रोत्साहित कर रहे हैं। इटली, स्पेन, इराक़, भारत, लेबनान, जर्मनी और क्रोएशिया से आए हुए वीडिओ—और मैं जानती हूँ कि यह तो अभी आधी सूची भी नहीं है।

और मैंने सुना है कि कल शाम न्यूयॉर्क शहर में कई लोगों ने एक ही समय पर साथ मिलकर यह प्रसिद्ध गीत गाया, "न्यूयॉर्क, न्यूयॉर्क!" मैं बड़े बाबा जी के मन्दिर में यह बात इसलिए कह रही हूँ क्योंकि मैंने बड़े बाबा जी पर आधारित जो पुराने समय के कुछ Super 8 [सुपर ८] वीडिओ देखे हैं, उनमें हज़ारों लोग उनके सामने गा रहे हैं, नृत्य कर रहे हैं और वाद्ययन्त्र बजा रहे हैं। वे सचमुच संगीतमय शोर-गुल कर रहे हैं!

इसलिए मुझे लगता है कि बड़े बाबा जी को आज रात "One World: Together at Home" कार्यक्रम भी बहुत अच्छा लगेगा।

जैसा कि आप जानते होंगे कि यह चन्दा जमा करने के लिए किया जाने वाला कार्यक्रम नहीं है—इसका उद्देश्य है, विश्वभर के स्वास्थ्यकर्मियों का सम्मान करना और जो अनकही अच्छाई वे इस संसार को दे रहे हैं, दूसरों की जान बचाने के लिए अपने जीवन को लगातार ख़तरे में डाल रहे हैं, उसके लिए उनके प्रति समर्थन व्यक्त करना और उन्हें सम्बल देना।

इस कार्यक्रम में कई सारे संगीतज्ञों, हास्यकलाकारों और अन्य मनोरंजनकर्ताओं के प्रदर्शन होंगे। इसमें हम उन लोगों से कहानियाँ भी सुनेंगे जो इस आपदा का सबसे पहले सामना कर रहे हैं, जो इससे लड़ने के लिए हमारी ढाल बने हुए हैं यानि हमारे डॉक्टर, नर्स और खाद्य-सामग्री की आपूर्ति में लगे लोग।

इस "One World" "एक विश्व" कार्यक्रम के कारण मुझे मानवता पर बहुत गर्व महसूस हो रहा है। और एक संगीतज्ञ होने के नाते, जो बात मुझे विशेषकर अच्छी लग रही है, वह यह कि कैसे संगीतज्ञ और अन्य कलाकार इस कार्यक्रम का निर्माण करने में सहायता करने के लिए एक-साथ आ गए हैं—हमें उत्साह से भरने के लिए, स्वास्थ्यकर्मियों को अधिक साहस व आन्तरिक बल देने के लिए, जो लोग इस समय में अपने हालात से जूझ रहे हैं उन्हें आर्थिक मदद देने के लिए और ऐसी बहुत-सी चीज़ों के लिए।

सिद्धयोग पथ पर, यह हमारा स्पष्ट अनुभव है कि संगीत के स्पन्दनों में अपार उपचारक शक्तियाँ होती हैं। तो अगर आपके पास समय हो, और अगर यह आपके टाइम ज़ोन के अनुसार सम्भव हो तो मैं आप सबको हृदय से यह सुझाव देती हूँ कि आप अपना समर्थन अभिव्यक्त करने के लिए इस कार्यक्रम में भाग लें। हम एक विश्व, एक ही समाज हैं।

आप सभी को धन्यवाद—आप जो सबसे हिम्मती और प्यारे हैं।

आप सभी को अलविदा जो
इस तेज़ी-से फैलते और विनाशकारी वायरस के ख़िलाफ़ अपनी जंग में मज़बूती से टिके हैं।

फिर मिलेंगे, मेरे प्यारे मित्रो।
अच्छा सोचें, आप सभी भले लोग।

अच्छी तरह रहना, इस संसार के सभी बच्चो।
अच्छी तरह रहना, सभी प्यारे लोगो।

स्वस्थ रहें, सभी ज्ञानवान बुज़ुर्गों।

मेरी यह कामना है कि हम सब सुरक्षित रहें, हममें से हर एक और हम सभी।

आइए हम सब अपने दिलों में एक-दूसरे से जुड़े रहें।

आइए हम सब अपने सिद्धयोग संघम् से जुड़े रहें।

हम यह विश्वास रखें कि हमारा भविष्य उज्ज्वल है।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।